“जब मैं भयभीत हूँ, तब मैं तुझ पर भरोसा करूँगा”

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 1

ऊद ने कहा:

भजन संहिता 56:3-4 (NIV)
“जब मैं भयभीत होता हूँ, तब मैं तुझ पर भरोसा करता हूँ। मैं परमेश्वर में, जिसका मैं वचन प्रशंसा करता हूँ, विश्वास
करता हूँ और भयभीत नहीं होता। मनुष्य मेरे लिए क्या कर सकता है?”

यह पद भय के समय परमेश्वर में भरोसा करने की गहरी धर्मशास्त्र संबंधी शिक्षा को उजागर करता है। दाऊद, जीवन-धमकी वाले संकट के बीच भी, डर के बजाय विश्वास को चुनते हैं। यह भजन यह बताता है कि विश्वासियों की निर्भरता मानवीय शक्ति पर नहीं, बल्कि परमेश्वर की वचनबद्धता और वादों पर होनी चाहिए।

ईसाई जीवन में भय की वास्तविकता

जब तक हम पृथ्वी पर रहते हैं, चाहे हम कितने ही आध्यात्मिक रूप से परिपक्व या “पूर्ण” क्यों न हों, हमें परीक्षाएँ और भयभीत क्षण अनुभव होंगे। बाइबल स्वीकार करती है कि परम भक्त भी दुख और संकट के समय से गुजरते हैं।

“जब मैं भयभीत हूँ, तब मैं तुझ पर भरोसा करूँगा”

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 2

यूहन्ना 16:33
“मैंने यह बातें तुमसे कही कि तुम मुझमें शांति पाओ; संसार
में तुम्हें संकट होगा, पर धैर्य रखो।”

2 तीमुथियुस 3:12
“सभी जो धर्मनिष्ठ जीवन जीना चाहते हैं, उन्हें भी विपत्ति
और सताया जाना पड़ेगा।”

दाऊद इन समयों को कहते हैं “मेरे भय के दिन” — यह तीव्र आध्यात्मिक और भावनात्मक संकट के क्षण हैं।

“भय के दिनों” के विभिन्न रूप

1. शोक
प्रियजनों का अचानक खो जाना सबसे मजबूत विश्वास को भी हिला देता है। यहोब इसका प्रमुख उदाहरण हैं:

यहोब 1:13-19 (KJV)
उन्होंने एक ही आपदा में अपने सभी बच्चों को खो दिया, फिर भी

“जब मैं भयभीत हूँ, तब मैं तुझ पर भरोसा करूँगा”

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 3

वे धर्मनिष्ठ रहे।

2. उत्पीड़न और संकट
दाऊद पर राजा साऊल का लगातार पीछा दर्शाता है कि विश्वासियों को उत्पीड़न में किस प्रकार के संकट का सामना करना पड़ता है।

इब्रानियों 11:37-38
“उन्हें पत्थर मारकर मारा गया, दुःख और यातनाएँ दी गईं, वे अजनबियों के घरों और गुफाओं में भटकते रहे।”

3. गंभीर बीमारी
अचानक और गंभीर बीमारी निराशा ला सकती है।

फिलिप्पियों 2:25-27 (ESV)
एपाफ्रोदितुस की बीमारी और मृत्यु के कगार पर होना दिखाता
है कि परमेश्वर के विश्वासपूर्ण सेवक भी संकट का सामना करते हैं।

4. विश्वासघात
निकटजनों द्वारा धोखा मिलना, यीशु के यूहूदा के अनुभव के समान है।

“जब मैं भयभीत हूँ, तब मैं तुझ पर भरोसा करूँगा”

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 4

मत्ती 26:14-16 (NIV)
ऐसा विश्वासघात गहरे घाव और भरोसे की चुनौती पैदा कर सकता
है।

5. संपत्ति की हानि
यहोब की तरह, सभी भौतिक संपत्ति और सुरक्षा खोने पर भय और विश्वास की परीक्षा होती है।

यहोब 1:21 (NASB)
“निष्पक्षता और धैर्य के साथ परमेश्वर पर भरोसा करना
चाहिए।”

भय के दिन का सामना करना

यदि आप ऐसे समय से गुजर रहे हैं, निराश न हों और परमेश्वर से दूर न जाएँ। बल्कि दाऊद का उदाहरण अपनाएँ:

“जब मैं भयभीत हूँ, तब मैं तुझ पर भरोसा करूँगा।”

“जब मैं भयभीत हूँ, तब मैं तुझ पर भरोसा करूँगा”

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 5

यह विश्वास परमेश्वर की संप्रभुता और देखभाल को स्वीकार करने का कार्य है, भले ही परिस्थिति कितनी भी कठिन क्यों न हो।

यहोब का उदाहरण महत्वपूर्ण है: जब उनकी पत्नी ने उनसे परमेश्वर को कोसने और मर जाने के लिए कहा, उन्होंने इंकार किया।

यहोब 2:9-10 (ESV)
यह दृढ़ता और आशा का प्रतीक है।

शास्त्र से सांत्वना और आशा

यिर्मयाह 29:11 (NIV)
“क्योंकि मैं जानता हूँ कि मैं तुम्हारे लिए क्या योजना
बनाता हूँ,” यहोवा कहता है, “समृद्धि की योजना और हानि न पहुँचाने की योजना, आशा और भविष्य देने की योजना।”

यह वादा हमें याद दिलाता है कि परमेश्वर की योजनाएँ हमारी भलाई के लिए हैं, भले ही हम मार्ग न देख सकें।

“जब मैं भयभीत हूँ, तब मैं तुझ पर भरोसा करूँगा”

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 6

याकूब 5:11 (ESV)
“देखो, हम उन लोगों को धन्य मानते हैं जिन्होंने दृढ़ता दिखाई। आपने यहोब की दृढ़ता सुनी है और देखा है कि प्रभु की मंशा क्या है, कि वह दयालु और कृपालु है।”

परमेश्वर की दया उन विश्वासियों को बनाए रखती है जो दुख सहते हैं।

परमेश्वर जो बहाल करता है

यहोब के मामले में, परमेश्वर ने जो खोया था उसका दोहरी मात्रा में पुनःस्थापन किया और उन्हें नया परिवार दिया।

यहोब 42:10-17 (NIV)

दाऊद, साऊल द्वारा पीछा किए जाने के बावजूद, कभी भी परमेश्वर में विश्वास नहीं छोड़ते। अंततः, परमेश्वर ने उनकी रक्षा और सम्मान किया।

“जब मैं भयभीत हूँ, तब मैं तुझ पर भरोसा करूँगा”

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 7

इसमें कई प्रमुख ईसाई सत्य उजागर होते हैं:

परमेश्वर की संप्रभुता: परिस्थितियाँ चाहे कितनी भी अस्थिर क्यों न लगें, वह नियंत्रण में हैं।
भय पर विश्वास: परमेश्वर में भरोसा आध्यात्मिक अनुशासन और अनुग्रह का साधन
है।
परमेश्वर की दया और पुनर्स्थापन: दुख अस्थायी है; परमेश्वर की दया शाश्वत है। पुनरुत्थान की आशा: हमारा अंतिम उपचार और मिलन मसीह में है।

यशायाह 53:4 (NIV)
“निश्चय ही उसने हमारा दुख उठाया और हमारे कष्ट सहन किए…”

यीशु ने हमारे भय और दुख उठाए ताकि हमें शांति मिल सके।

प्रभु आपको आशीर्वाद दें और आपके विश्वास को आपके भय के दिनों में मजबूत करें।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp